1. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

2. Acc. No. :→ 50530. नामदेव जी की परिचई।

3. Acc. No. :→ 50531. तिलोचन जी की परिचई। अनन्त दास कृत।

4. Acc. No. :→ 50532. अंगद जी की परिचई। अनन्त दास कृत।

5. Acc. No. :→ 50533. प्रह्लाद लीला।

6. Acc. No. :→ 50534. कबीर के दोहे।

7. Acc. No. :→ 50535. शकुनावली।

8. Acc. No. :→ 50536. सुखदेव लीला।

9. Acc. No. :→ 50537. ध्रुव चरित्र।

10. Acc. No. :→ 50538. कलजुग पचीसी

11. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

कीपरचईसंपूरनसमाप्त॥

अथतिलोचनजीकीपरचइ

चौपई॥ सुनौतिलोचनकीअ
धिकाई॥ तामैंकेसौबितिरहा
ई॥बहुआचरकरैबिधिरजा
हरिस्यौंहेतऔरनहिंदुजा॥१॥
सेवापाककरतदिनबीता॥देह
कष्टहैजनमजीत्या॥द्वारैसेव
गऔरनकोई॥त्रियापुरिषदु
षपांवैदोइ॥२॥जगतीबछिल
रेकबुधिबिचारी॥यामैंटलक

तिलोचन जी की परचई।

अनन्त दास कृत।

रोदिन च्यारी॥ रीति प्रीति जब सांची
देषी॥ तब हरि आये सदा बबेकी॥ ३
देषो दास कै बहूत अंदेसो॥ आ
इ बरोटै बैठो केसो॥ फाटी का
बलि टुटी पनही॥ रूषे मुडि मैल
सब तन ही॥ ४॥ जब ही लोचन बु
ठी बाता॥ कहां तु आया कहा तु जा
ता॥ ना कहु आउं नां कहू जाउं॥
जै कोइ राषै तहां रहाउं॥ ५॥ कहा
तेरै कूंटुब कहा तेरे नाई॥ कहा
तेरै घर ता कहा तेरै माई॥ ना मे
रै कंटुब ना मेरै चाई॥ ना मेरै पि

तानामेरे माई॥ रहौ बिरती यौ राषे
कोई॥ कहै टहल करि आउ से
ई॥ ब्राम्हन की बिधि सब ही जानै
छत्री धरम नही मो छानै॥ ७॥ बै
स्य करम सब हाथि हमारै॥ सूद्र
करम कछु करे बिचारै॥ बहोत
मेर षेति को जानै॥ जु षौर है न
कबहू अघानै॥ ८॥ जा मेर हू स
हू षेमाई॥ पीसत पोवत सब हि
न जाई॥ हम राषा रहै जौ माइ॥
जेतौ नावै तेतौ षाई॥ ९॥ कौन

रहो राखि जो जानो ॥ हिरदै कपट कवहू नहि आनो ॥ कहै ति लोचन सुनि रे भाई ॥ अपना नाव तू करुं समझाई ॥ १० ॥ कहै बिरति यो सूरे स्वामी ॥ नाम हमारो अंतरजामी ॥ बुतन मागै जीयो चाहै ॥ प्रीत करै तो सदा निबाहै ॥ ११ ॥ आदर सतिपेट भरी दीज्यौ ॥ बिन आदर हम कौ जिनि दीजो ॥ ईतनां कम पै बोल बुलाउ ॥ प्रीत घटै तब ही उठि जाउ ॥ कोतिग देखै नर अरु नारी ॥ सुनि सुनि बात हसै रैता

री॥जब ही तिलोचन के मनि मा
न्यो॥बाह पकरि अपनै घरि आ
न्यो॥१२॥अरधंगी सौं कह्यौ बुला
इ॥याकी तौ कौ ला जबडाई॥ ला
जबडाई काहे केरी॥हू तौ सदा
तुम्हारी चेरी॥१३॥पीसपो वै ना
रै गी पांन्यौ॥भली करी तुम से
वग आन्यौ॥करि करि पाक धरै
जी आगे॥कछु न रा खै पा कै मा
गै॥१४॥भुखौ होइ ज भोजन लीजौ॥
पीछै हम कौ दोस न दीज्यो॥१५॥

॥दोहा॥ जपतप संजम साधि
करि॥ बाद करै तन छीन॥ सुमरन
रमरमन न जांनही॥ हरि भगत
न कौ आधीन॥१॥ चौपई॥ ल्या
ई तेल असनांन कराया॥ उज
ल बस्त्र लै पहिराया॥ ता तिरो
टी तूरत पूवाई॥ पंडा सो ला
आंनि जिमाई॥१॥ जब तें टहल
करण सब लागो॥ तिलोचन कौ
संसो भागो॥ सकल अंग सेवा
कौ स्हेरो॥ तिलोचन कौ मन न
यो घेरो॥२॥ मन की जानि कहल

करि आवै ॥ मुषतौ कछु कहरा नहि
पावै ॥ कहै तिलोचन सुनि हरिदा
सी ॥ भयो बिरति यौ रहै कजासी
३ ॥ न लो बिरति यो स्वामी जांरण ॥
न पावै ॥ ऐसौ सेवग बहूरि न आ
वै ॥ पल पल की हरि प्रीति बिचारै
पी सत पोवत माता नहि हारै ॥ ४ ॥
ऐसी भांति बरष दिन रहिया ॥ ॥
माता कबहू सुषन ही पैया ॥ ए
क दिना मन निउपजी ऐसी ॥ जा
ई परोसनि के ढिग बैसी ॥ ५ ॥ क

हे परौ सनि तन चयो खीना ॥ बसत
रस हित सरिर मलीनां ॥ सहज
सुनायक है हरि दासी ॥ सुंनिप
रौ संनिदु घत्र्यो रूहासी ॥ ६ ॥ पीस
त पो वत घटज्ञा बल मेरा ॥ चूबौ
रहै न अघावै चेरा ॥ एती बात क
ही बरजो ताही ॥ स्वामी सुंनै बि
उरे मोही ॥ ७ ॥ इतनि बात सुंनी
हरि जबही ॥ अंतरि ध्यान हू बाह
रि तबही ॥ गयौ बिरत्ति यौ मनि
पछिताना ॥ हरि दासी सेयो जग

तरिसाना॥५॥मैतौ कछुनकहौ
गुसाइ॥जबतिलोचन अंननपा
ई॥दिन दोइ तजेंा अनरपाणी॥
तबहरि बोले आकासबाणी॥ए
सेवा कै मैं सौकी न्हि॥रहे बर सदि
नलियौ नचीन्ही॥हठ करैतौबहु
स्यौ आउं॥रहूजनमचरिकहू
नजाउं॥सुनिहरिदासी हरियो
बोलै॥नयौबिरतिया घरीघरि
डोलै॥हम अपराधि मरम न जां
णां॥समझि कै सैपहिचांना

वाद

नामदेवजीसाखी

ड्री हरप्दीवी फुति: चात्ते चीरप
र चातम: मानी सो केसरी संहर को:

११ जैहरिहम को दरसन दीनो ॥ तोरू
पचत्रभुज काहे नही कीनो ॥ मरजा
दाबिनजगतिनहोइ ॥ स्वामी सेवग
मिटी जाय दोई ॥ १२ ॥ कवलापति को
ध्यान हमारे ॥ ज्यो पतिबरता पुरिष
तमारे ॥ जबहरिरूपचत्रभुज कीनां
त्रलोचन को दरसन दिनां ॥ १३ ॥ त्रिलो
चनके मनि नये आनंदा ॥ परमआना
द्य मिले गोबिंदा ॥ जैसा हरि तिन
ही का चेरा ॥ जिनि रे पाचौ इंद्री घेरा
१४ ॥ दोहा ॥ दास अनंत कथा कही
संतन को जस गाय ॥ त्रलोचन की